International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 5.143, Volume 02, No. 03, July - September, 2020, pp.375-380

समकालीन हिन्दी ग़ज़ल में आम आदमी

डॉ. शमा खान*
भुवनेश कुमार परिहार**

शोध सारांश

समकालीन हिन्दी ग़ज़ल में आधुनिक भाव बोध के साथ–साथ आम आदमी के अस्तित्व एवं संघर्ष की अनेक संवेदनाओं की अभिव्यक्ति प्रकट होती है। हिन्दी ग़ज़लकारों ने अपनी ग़ज़लों में आम आदमी के प्रेम, संघर्ष, पीड़ा, दुख, दर्द, भुख, गरीबी, बेकारी, निर्धनता, व्यथा, शोषण, संत्रास, घुटन, द्वन्द्व, दीनता, बेरोजगारी, अलगावपन, अकेलेपन, मूल्यहीनता, एकाकीपन, स्वार्थ, दोहरे चरित्र, त्रासदीपूर्ण जीवन का यथार्थ चित्रण किया है। इन ग़ज़लकारों ने आमजन की भाग–दौड़, आशा–निराशा, सच–झूठ, रोटी, धोखाधड़ी जैसी समस्याओं के साथ उसकी फटेहाल जिन्दगी का वास्तविक चित्र अपनी ग़ज़लो में उकेरा है।

मुख्य शब्दः *कुण्ठा, घुटन, संत्रास, अजनबीपन, अकेलेपन, त्रासदी, नुमाइश, भुख, अविश्वास, असंतोष, विसंगति, यातनागृह, दुराचार,घृणित, अपमानित, गुलाम, पूंजीवादी, अर्थव्यवस्था, अलगाव, हताशा, निराशा, सुख–दुख।*

प्रस्तावना

ग़ज़ल काव्य की सर्वाधिक प्राचीन एवं विशेष लोकप्रिय विधा है। इसकी प्रसिद्धि के कारण ही हिन्दी कवियों ने इसे अपनाया। इन ग़ज़लकारों ने आम आदमी की पीड़ा को व्यक्त करते हुए उसके जीवन में व्याप्त दुख एवं संघर्ष को ग़ज़लों का विषय बनाया। समकालीन हिन्दी ग़ज़ल में आम आदमी की पीड़ा, कुण्ठा, हताशा, निराशा का स्वर व्यक्त है। हिन्दी ग़ज़लकारों ने अपने जीवन मे भोगे हुए यथार्थ क्षणों को प्रतिभागी मानकर आम आदमी की कुण्ठा, घुटन, संत्रास, त्रासदी, अकेलेपन, अजनबीपन का यथार्थ चित्रण किया। आज का आम आदमी दुख एवं अभाव में जी रहा है। आज का आम आदमी भुख, बेकारी, गरीबी, निर्धनता, व्यथा के कारण फटेहाल जीवन जीने के लिए मजबुर है। वह अपने इस अभावग्रस्त जीवन को नियति मानकर जीता है। वह इन समस्याओं को सुलझाने के चक्कर में उलझता ही जाता है और अंत में इन्ही समस्याओं से जुझते हुए वह मर जाता है। दुष्यन्त कुमार ने देश के आम आदमी को चिथड़े पहने हुए हिन्दुस्तान के समान देखा है जो वास्तविक रूप से आम आदमी का देश है। उन्होनें भारत के नक्शे में फटेहाल जिन्दगी को देखा है–

''कल नुमाइश में मिला वो चीथड़े पहने हुए,
मैनें पुछा नाम तो बोला हिन्दुस्तान है।''[1]

वर्तमान काल में आम आदमी भौतिक सुख–सुविधाओं को पुरा न कर पाने के कारण दुख एवं क्षोभ से ग्रस्त हो जाता है। वह जिस यातना के दौर से गुजर रहा है उसमें 'भुख' की समस्या प्रमुख है। आज का आम आदमी पेट की आग से बेहाल है, वह पेट के भुगोल में उलझा हुआ है। वह उदर पूर्ति के लिए अपना ईमान भी बेच देता है। गरीबी की वजह से उसका चूल्हा नही जल रहा है, वह भूखे सोने को मजबुर है। हताशा,

---

* सह आचार्य (हिन्दी), राजकीय कन्या महाविद्यालय, अजमेर, राजस्थान।
** सहायक आचार्य (हिन्दी), राजकीय महाविद्यालय, सांभर लेक, जयपुर, राजस्थान।

अविश्वास से गुजरने के कारण आम आदमी के मन में गहरा असंतोष भर जाता है। गरीबी और बेकारी के कारण वह अपने परिवार को पेट भर भोजन भी खिला नही पा रहा है। ग़ज़लकार अदम गोंडवी की यह ग़ज़ल कितनी सटीक है –

''घर के ठण्डे चूल्हे पर अगर खाली पतीली है
बताओं कैसे लिख दुँ धूप फागुन की नशीली है।
बगावत के कमल खिलते हैं दिल की सूखी दरिया में
मैं जब भी देखता हूँ आँख बच्चों की पनीली है।''[2]

हिन्दी ग़ज़लकारों ने आम आदमी की विवशता का बेबाक एवं सटीक चित्रण किया है। आज के युग में आम आदमी जिंदगी की भाग दौड़, निराशा, सच–झुठ एवं समकालीन विसंगतियों से आहत एवं निराश है। डॉ. सूर्यभान गुप्त ने अपनी ग़ज़लो में आम आदमी की पीड़ा एवं वेदना व्यंग्य रूप में प्रकट की है, वे कहते है कि हम अपने मन के घाव किसको दिखाएँ–

''किसको मन के घाव दिखायें, हाल सुनाएँ जी के,
इन्सानों से ज्यादा अच्छे पत्थर किसी नदी के।
सारी उम्र छुडाते गुज़रे, महाजनों से चेहरे,
बंधुआ मजदुरों से अब तो जीवन हुए सभी के।''[3]

आज का आम आदमी चौतरफा समस्याओं से घिरा हुआ है। उसका जीवन उसके लिए बोझ समान है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात ऐसा लगा कि आम आदमी दशा में कुछ सुधार होगा, उसके सामाजिक एवं आर्थिक हालात अच्छे होंगे लेकिन ऐसा बिलकुल नही हुआ। आपातकाल में भी आम आदमी का जीवन शून्य हो गया था। भारत देश को स्वतंत्र हुए कितने दिन हो गये लेकिन अब भी आम आदमी का जीवन मूलभूत आवश्यकताओं– रोटी, कपड़ा और मकान की पूर्ति नही कर पाया है। इनके अभाव में उसको जीवन जीना दूभर सा लगता है। ऐसे लोग आजादी का जश्न कैसे मनायें। हिन्दी ग़ज़लकार अदम गोंडवी ने इस बात पर करारा व्यंग्य किया है–

''आजादी का ये जश्न मनायें वे किस तरह
जो आ गये फूटपाथ पर घर की तलाश में''[4]

आज का आम आदमी यातनाओं के दौर से गुजर रहा है। वह जिस परिवेश, क्षेत्र, स्थान पर जी रहा है, उसके लिए वह यातनागृह के समान है। सुखी एवं खुशहाल जीवन उसके लिए कल्पना मात्र है। वह अपना जीवन किश्तों में जी रहा है एवं उन्ही किश्तों में जीते हुए वह मर रहा है। हिन्दी ग़ज़लो में उसकी बदहाली एवं फटेहाल जिन्दगी का यथार्थ चित्रण मिलता है। ऐसी परिस्थितियों ने उसे एकाकी एवं स्वार्थी बना दिया है। वह इतना स्वार्थी हो गया है कि उसकी सोचने समझने की शक्ति नष्ट हो रही है, उसका विवेक खत्म सा हो गया है। उसमें असंतोष एवं नफरत पनप रही है, वह व्यभिचार एवं दुराचार में लिप्त हो रहा है। डॉ. गोपाल बाबु शर्मा के अनुसार आज के आम आदमी का सब कुछ खत्म हो रहा है फिर भी वह बेफिक्र है–

''आचरण खो रहा आदमी,
निर्वसन हो रहा आदमी।
पाप तो और मैले हुए,
पुण्य को धो रहा आदमी।
वैर, नफ़रत तथा स्वार्थ के,
बीज अब बो रहा आदमी।
आज सब कुछ लुटा जा रहा,
चैन से सो रहा आदमी।''[5]

समकालीन युग में आम आदमी के लिए भौतिक सुख–सुविधायें अपार है लेकिन वह इन सुख–सुविधाओं में डुबकर अकेला हो गया है, वह भीड़ में भी तन्हा महसूस करता है। वह खुद के द्वारा महसूस किये गये अकेलेपन, अजनबीपन, खोखलेपन को स्वयं के भीतर खोजता है। महानगरीय जीवन जीने वाला व्यक्ति इस समस्या से अधिक ग्रस्त है। वह रोज जीता है एवं रोज मरता है। वह जिन्दगी की नियति को भाग्य मानकर जीवन–यापन करता है एवं हमेशा आशा की नयी किरण का इंतजार करता है। ग़ज़लकार निदा फ़ाजली के अनुसार वह भीड़ में भी अकेला एवं तन्हा महसुस करता है–

''हर तरफ हर जगह बेशुमार आदमी,
फिर भी तन्हाइयों का शिकार आदमी।
सुबह से शाम तक बोझ ढ़ोता हुआ,
अपनी ही लाश का खुद मज़ार आदमी।''[6]

आज का आम आदमी स्वार्थ के वशीभूत होकर इतना अंधा हो गया है कि उसे दुसरों के सुख–दुख की परवाह नही रही। वह जरूरत के मुताबिक रिश्तें निभाता है। वह आत्म एवं स्वकेन्द्रित हो गया है। आज का आम इंसान जिस गली, मौहल्ले में निवास करता है, वहाँ पर कितनी भी बड़ी घटना घटित क्यों नही हो जाये, इस घटना से उसका कोई लेना–देना नही है। उसकी हम प्रकृति पर व्यंग्य करते हुए ग़ज़लकार दुष्यन्त कुमार ने लिखा है कि–

''इस शहर में वो कोई बारात हो या वारदात
अब किसी भी बात पर खुलती नही खिड़कियाँ।''[7]

हिन्दी ग़ज़लकारों ने आम आदमी की पीड़ा, दुख को व्यक्त करने के साथ–साथ उसकी दीनता, भूख, गरीबी, दर्द, त्यौहार मना न सकने की मजबुरी, बच्चों की जरूरतों को पूरा नही कर पाने का मलाल, उन्हे अच्छे विद्यालय में पढ़ा नही सकने का दुख, अच्छे भोजन एवं आवास का अभाव, झूठी मुस्कान, अर्थाभाव, दिखावा, बनावटीपन, अजनबीपन का यथार्थ चित्रण किया है। इन ग़ज़लकारों ने आम आदमी के जीवन को सच्चे अर्थो में व्यक्त किया है। इन्होने उसके अभाव ग्रस्त जीवन के साथ–साथ उसके संघर्ष को भी अपने काव्य में स्वर दिया है। दुष्यन्त कुमार की यह ग़ज़ल द्रष्टव्य है –

''बंजर धरती, झुलसे पौधे, बिखरे कांटो, तेज हवा,
हमने घर बैठे–बैठे ही सारा मंजर देख लिया।
चट्टानों पर खड़ा हुआ तो छाप रह गई पाँवो की,
सोचो कितना बोझ उठाकर मैं इन राहों से गुजरा।''[8]

आज का आम आदमी अपनी सोचनीय स्थिति मे भी अपनी तकलीफो, पीड़ाओं व दुखों को किसी अन्य पर कम से कम जाहिर करता है। मेहनत के बावजुद भी उसे अच्छा पारिश्रमिक नही मिलता है जिसके कारण वह अपने परिवार को अच्छे से पाल नही पाता है। इस महंगाई के दौर में मेहनत करने के बावजूद उसे रोटी, कपड़ा, मकान उपलब्ध नही हो पाते। आम आदमी की स्थिति दयनीय हो गई है। विषम परिस्थितियों में वह अपने आदर्शों एवं जीवन मूल्यों को ताक में रख देता है। इन आम आदमियों में जो दिहाड़ी या दैनिक वेतन भोगी मजदुर है उनकी स्थिति सोचनीय है। अगर उसे दिनभर काम नही मिलता तो उसके घर का चूल्हा नही जल पाता है। वह अच्छे दिनों के इंतजार में एक दिन स्वयं ही समाप्त हो जाता है लेकिन उसका इंतजार समाप्त नही होता है। काम के इंतजार में जब सुबह से शाम हो जाती है, उसको पता ही नही चलता है। ग़ज़लकार बालस्वरूप राही ने अपनी ग़ज़लों में आम आदमी की इसी बेकारी, बेरोजगारी, दीनता, विवशता को यथार्थ स्वर दिया है–

''किस मुहुरत में दिन निकलता है ?
शाम तक सिर्फ हाथ मलता है।
तन बदलती थी आत्मा पहले,
आजकल तन उसे बदलता है।
एक धागे की बात रखने को,
मोम का रोम–रोम जलता है।
सिर्फ दो–चार सुख उठाने को,
आदमी बारहा फिसलता है।''[9]

वर्तमान परिवेश में आदमी एकाकी हो गया है। उसके परिवार में अकेलापन, विखंडन एवं बिखराव है। वह अपने परिवार के लिए कमाने की वस्तु बनकर रह गया है, वह स्वयं में ही कही गुम हो गया है। वह संयुक्त परिवार के बजाय अपने निजी स्वार्थों के सहारे एकाकी होकर जी रहा है। वह अकेलेपन, अजनबीपन एवं घुटन से त्रस्त है। पैसा, स्वार्थ एवं झुठे मान–सम्मान के लिए वह अपने परिवार की प्रतिष्ठा और गरिमा को भूलता जा रहा है। वह कुंठित, हताश एवं निराश होता जा रहा है। ऐसे में वह खुदकुशी करते हुए भी डरता है क्योंकि उसका कर्ज़ उसके बच्चों को चुकाना पड़ेगा। ग़ज़लकार बल्ली सिंह चीमा की यह ग़ज़ल कितनी सार्थक एवं सटीक है –

''लड़ मरू या मार दूं, हैं रास्ते दो ही रब्बा,
खुदकुशी मैं कर भी लूं, तो कर्ज़ से बच्चे नही बचते।
काम खेती का रहा होगा, कभी उत्तम मगर 'बल्ली',
आजकल कर्ज़ा चुकाने के लिए पैसे नही बचते।''[10]

समकालीन ग़ज़लों में आम आदमी की विडम्बना पूर्ण स्थिति का यथार्थ चित्रण मिलता है। अर्थ के अभाव के कारण वह कुपोषण, अशिक्षा, पिछड़ेपन का शिकार हो रहा है। समाज में गरीबी–अमीरी की खाई बहुत गहरी है। समाज में कुछ लोग अवतार की तरह जी रहे है तो वही आम आदमी किसी गुनहगार की तरह जी रहा है। धनवान लोग गरीबों का शोषण करके उनको रोटी भी उपकार की तरह देते है। आम आदमी के जीवन का अस्तित्व कुंठा, निराशा, हताशा, अनास्था के झूले पर झूल रहा है। पूँजीवादी युग में जिस व्यक्ति की मानसिकता पूँजीवादी होती है वह आम आदमी के प्रति झूठी सहानुभूति एवं कृत्रिम आत्मीयता प्रकट करता है। इनके द्वारा शोषित किये जाने पर आम आदमी का जीवन घृणित एवं अपमानित ही रहता है। आम आदमी के अपने से बेहतर निर्वाह के लिए युग, परिवेश, परिस्थिति, वातावरण को स्वयं के अनुकूल बनाना चाहता है लेकिन अज्ञानता, अशिक्षा, बेकारी, दिशाहीनता के कारण वह अपनी मूल स्थिति तक ही सिमट कर रह जाता है। ऐसी स्थिति में उसने जीवन मूल्यों को ताक में रख दिया है। वह पैसे वालों के हाथों बिककर गुलाम की सी जिन्दगी जीने को मजबूर हो गया है। इसी मजबुरी को ग़ज़लकार हदयेश मयंक ने कितनी सार्थक अभिव्यक्ति दी है–

''बिकने खरीदने में रूकावट नही रही,
हम सब हुए गुलाम कि आहट नही रही,
कुछ लोग झुग्गियों को परेशान है देखकर,
पहले सी शहर की जो सजावट नही रही,
चेहरों की झुरियों में है तस्वीर देश की,
कहता है कौन साफ लिखावट नही रही।''[11]

आज के आम आदमी को अपनी किस्मत से लाखों शिकायत है। वह अपने परिवार के लिए जीवन में पल–पल समझौता करता है। वह गाँव से शहर आ गया लेकिन उसकी मजबूरियों, पीड़ाओं, दुखों ने साथ नही छोड़ा। आज का आम आदमी हर तरह के दुखों से ग्रस्त है, इसीलिए उसे जीवन को भोगना मुश्किल लगता है। सुख–सुविधा के नाम पर उसके पास कुछ भी नही है। ग़ज़लकार ज्ञानप्रकाश विवेक के अनुसार उसने एक फटे कम्बल में कई सर्दियाँ निकाल दी है–

''निभाई है फटे कम्बल से रिश्तेदारियाँ हमनें
गुजारी है बड़ी दिक़्कत से यारों सर्दियाँ हमने।
हमारी भूमिका ऐ जिन्दगी, तू खाक समझेगी
छुपाई कहकहों में आसुँओं की अर्जियाँ हमने।''[12]

हिन्दी ग़ज़लो में आम आदमी द्वारा भोगा हुआ यथार्थ व्यक्त होता है। मनुष्य के जीवन की पीड़ा की छटपटाहट इन ग़ज़लों में सर्वत्र उपलब्ध है। आज का आम आदमी जीने के लिए नही खाता है अपितू खाने के लिए जीता है। जीवन की मूलभूत जरूरतों के आगे वह रिश्तो–नातों, प्रेम, दोस्ती को भी ठुकराने के लिए तैयार है। आमजन इतने व्यस्त है कि उसे जीने–मरने की भी परवाह नही है। आम आदमी के जीवन में विसंगतियाँ इतने गहरे तक समा गई है कि वह उससे बाहर ही नही निकल पा रहा है। इस हकीकत को ग़ज़लकार सुर्यभान गुप्त कितनी सहजता से व्यक्त करते है–

''दिल की बात होंठो तक न आए,
कसी यूँ गर्दनों पर टाईयाँ हैं।
मुतासिर लोग यूँ ही रोटियों से,
ख़यालों तक गई गोलाइया हैं।
मुहब्बत, दोस्ती, रिश्ते लहू के,
यहा बेवक्त की शहनाइयाँ हैं।
नगर की बिल्डिंगे, बाहें नगर की,
बशर टूटी हुई अंगडाईयाँ है।''[13]

वर्तमान दौर में आम आदमी के जीवन में खोखलापन है। महंगाई, भ्रष्टाचार के तले वह अपने एवं परिवार की इच्छाओं की पूर्ति नही कर पा रहा है । उसके सपने एवं ख्वाब सब आसूँओं के साथ बह गए –

''आसुँओं के साथ सब कुछ बह गया,
दिल में सन्नाटा सा बाकि रह गया।
रफ्ता रफ्ता बुझ गये सारे चराग़
एक चेहरा झिलमिलाता रह गया।''[14]

वर्तमान अर्थव्यवस्था में आम आदमी की कमर टूट गई है। अमीर एवं गरीब के बीच गहरी खाई है जो समाप्त होने के बजाय बढ़ती ही जा रही है। इस अर्थव्यवस्था में अमीर तो और भी ज्यादा अमीर हो रहा है एवं गरीब हद से ज्यादा गरीब हो रहा है। आम आदमी दो वक्त की रोटी के लिए भागदौड़ कर रहा है तो अमीर व्यक्ति खाने को पचाने के लिए। पूँजीवादी व्यवस्था में आम आदमी का शोषण हो रहा है एवं वह उससे उभर नही पा रहा है। उसकीं स्थिति को गजलकार इन्तजार गाजीपुरी ने इस प्रकार व्यक्त किया है–

''मुल्क में जो गरीब थे और गरीब हो गए,
रोटी उन्हें मिली नही, रहने को घर मिला नही।
रोज समुन्दरों के बीच, डुब रही है किश्तियाँ,
देखा है दुर–दुर तक कोई भी नाखूदा नही।''[15]

हिन्दी ग़ज़लों में आम आदमी के सम्पूर्ण जीवन में व्यक्त सुख–दुख, उदासी, निराशा, आसूँ एवं दर्द का यथार्थ चित्रण मिलता है। वह आम आदमी परिस्थितियों के हाथों विवश एवं बैचेन है। उसकी जिन्दगी बदहाल है। वह अच्छे घर के बजाय कोठरी या झोंपड़ी में रहने को विवश है। वह फटेहाल जीवन जीने के लिए मजबुर है। ग़ज़लकार राजेश रेड्डी ने आम आदमी की तंगहाली, बदहाली एवं विवशता का बड़ा ही सटीक चित्रण किया है जिसमें उसके जीवन की स्थितियाँ साफ उजागर हो जाती है–

''रोज खाली हाथ जब घर लौटकर जाता हूँ मैं
मुस्करा देते हैं बच्चे और मर जाता हूँ मैं।''[16]

निष्कर्ष

इस प्रकार हम देखते है कि हिन्दी ग़ज़लों में आम आदमी के जीवन की सम्पूर्ण झांकी हमें उपलब्ध होती हे। उसकी रोज की भागदौड़, आशा–निराशा, सच–झुठ के साथ –साथ उसके जीवन में व्याप्त प्रेम, पीड़ा, दर्द, संताप, भुख, गरीबी, बेकारी, दीनता, अलगावपन, अकेलेपन, अजनबीपन, संत्रास, घुटन का वास्तविक चित्रण हमें हिन्दी ग़ज़लों में देखने को मिलता है। समसामयिक हिन्दी ग़ज़ल में उसके त्रासदीपूर्ण जीवन के साथ ही जीवन में खुश रहने के लिए आशा की नई रोशनी दिखाई पड़ती है। आज के आम आदमी की पीड़ा, छटपटाहट, बेकारी, विवशता को इन ग़ज़लकारों ने सच्चाई के साथ हमारे सामने प्रस्तुत किया है। निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि समसामयिक हिन्दी ग़ज़ल में आम आदमी की भूख, पीडा, दुख, अभाव, आशा–निराशा, विवशता, बेकारी, तंगहाली, बदहाली, कुण्ठा, संत्रास, व्यक्त हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. दुष्यन्त कुमार : साये में धुप, राधाकृष्ण प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली 57
2. अदम गोंडवी : समय से मुठभेड़, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली 41
3. संपादक गौरीनाथ : हिन्दी की चुनिन्दा ग़ज़ले, अंतिका प्रकाशन, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश 26
4. नीरज : हिन्दी के लोकप्रिय ग़ज़लकार, हिन्द पॉकेट बुक्स, जोरबाग लेन, नई दिल्ली 21
5. डा. सरदार मुजावर : हिन्दी ग़ज़ल का वर्तमान दशक, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली 146
6. निदा फाजली : दुनिया जिसे कहते है, मंजुल पब्लिशिंग हाऊस, दरियागंज, नई दिल्ली 16
7. दुष्यन्त कुमार : सायें में धुप, राधाकृष्ण प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली 21
8. वही : '' '' 52
9. सं. शेरजंग गर्ग : हिन्दी ग़ज़ल शतक, किताब घर प्रकाशन, नई दिल्ली 61
10. बल्ली सिंह चीमा : हादसा क्या चीज है, समय साक्ष्य प्रकाशन, देहरादुन, उत्तराखण्ड 39
11. सं. रवीन्द्र कालिया : हिन्दी की बेहतरीन ग़ज़ले, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, लोदी रोड़, नई दिल्ली 110
12. ज्ञानप्रकाश विवेक : गुफ़्तगू अवाम् से है, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली 39
13. डॉ. रोहिताश्व अस्थाना : हिन्दी ग़ज़लः उद्भव और विकास, सुनील साहित्य सदन, दरियागंज, नई दिल्ली 276
14. सं. कन्हैयालाल नंदन : आज के प्रसिद्ध शायर– बशीर बद्र, राजपाल एण्ड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली 156
15. सं. कमलेश्वर : हिन्दुस्तानी ग़ज़ले, राजपाल एण्ड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली 190
16. वही : 138

❖◆❖